e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 8, August 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408015 |

हिंदी साहित्य में पुरुष विमर्श

Dr. Suchitra Kashyap

Associate Professor in Hindi, Govt. Dungar PG College, Bikaner, Rajasthan, India

सार

पिछले काफी समय से भारत में नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में महिला जाग्रति को लेकर क्रान्तिकारी कदम उठाये गये हैं जिनके कई मामलो में बहुत अच्छे परिणाम भी देखने को मिले हैं, और देखा जाये तो आज महिलाये पुरुषों से बराबर नहीं बल्कि कहीं आगे ही है, हालाँकि इसमें समाज की हर महिला को शामिल नहीं किया जा सकता पर फिर भी पहले की तुलना में अब काफी अंतर है..हाँ वो अलग बात है कि भारत में महिलाएं हमेशा से ही समाज में अहम् भूमिका निभाती रही है, जो आज की नारी लड़ झगड़ कर हासिल कर रही है वो अधिकार प्राचीन काल में स्वतः ही प्राप्त थे, किन्तु मुगलों के आक्रमण के बाद और भारत पर अंग्रेजी शासन के समय महिलाओं की स्थिति बदतर होती गयी, पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस दिशा में काफी प्रयास हुए और महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार आया भी। पर आज मैं उस पर बात नहीं करने जा रही। जो बात अबतक मैंने कही उसका मतलब सिर्फ यही था कि स्वतंत्र भारत में महिलाओं के बारे में तो व्यापक विचार–विमर्श हुआ, वो पढ़ें लिखें आत्मनिर्भर बने, संस्कारी बने, आधुनिक चीजों को जाने, पर इस पूरी कवायद में हम लडकों के बारे में, विचार करना ही भूल गये..कहीं ना कहीं ये बात लोगो के मन में घर कर बैठी है कि आखिर लडकों की चिंता करने की जररूरत ही क्या हैं! मुझे लगता है कि आज के ज़माने में लडकों के बारे में व्यापक विचार होना जरुरी है, अगर लडकों की शिक्षा ऐसी ही अधूरी रही (किताबी ज्ञान तक) तो जिस तरह से समाज में अपराध बढ़ रहे हैं, वो बढ़ते ही जायेंगे! एक बेहतर समाज बनाने में लडकों की, पुरुषों की भूमिका अहम् होती है, हम ये ही मानकर क्यों संतुष्ट हो जाते हैं कि लड़का अच्छी नौकरी कर रहा है, अच्छा काम रहा है। हम उनके बारे में बाकी बातों परउतनी गंभीरता से क्यों नहीं सोचते? जिस तरह से आजकल परिवार में बड़ों का आदर करना लगभग ख़तम हो रहा है, पैसे के लिए बेटा पिता तक से लड़ने में संकोच नहीं महसूस करता, क्या इसे शिक्षा की कमी नहीं माना जायेगा? लड़कियों के साथ होने वाले अपराध, छेड़छाड़, बलात्कार, धोखे से शादी करना। ये सब क्या हैं। कहीं ना कहीं लडकों की शिक्षा में कमी तो है ही। जो वो जानना ही नहीं चाहते ही गलत क्या हैं। अधिकारों के नाम पर मची क्रांतियों के करण आज ये हाल है कि कोई भी किसी का अधिकार मारना, अपना अधिकार समझता हैं! लडकों को अक्सर यही कहकर माँ गलतियाँ करने पर नहीं रोकती कि लड़की ही तो है। एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा था कि लडकों की प्रवृत्ति बैल की तरह होती हैं, अगर सही समय पर जिम्मेवारियों का हल रख दिया जाये, कर्तव्यों से बांध दिया जाये तो वो खेती में काम आते हैं और वरना वो ही बैल गलियों में घूमते हैं, लोगों को मारते हैं, चोट पहुचाते हैं!

परिचय

आज भी अपराध के ज्यादातर गंभीर मामलो में पुरुष ही क्यों जिम्मेवार होते हैं और गंभीर अपराध ना सही, घर परिवार के ज्यादातर लडाई झगड़ों में अहम् भूमिका निभाने वाले भी ये ही होते हैं! सड़क चलते कहीं लड़ते दिखेंगे, तो कहीं थूकते हुए, कहीं गन्दी गालियां देकर बात करते हुए, तो कहीं बेशर्मी से लड़कियों को छेड़ते हुए। लड़कियों को छेड़ना तो जैसे अधिकार ही हैं इनका। आखिर क्यों होते हैं लड़के ऐसे..और क्यों ऐसे लडकों को शिक्षित मन जाये! आजकल तो पढ़े लिखे, अच्छे परिवार के लड़के शामिल होते हैं, कभी कार चुराना, कभी शराब पीकर गाड़ी चलाना। कहीं ना कहीं लडकों का नैतिक पतन हुआ है..और अगर ऐसा ही रहा तो हालत और बुरे होंगे..क्योंकि लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ने वालों ने तो जैसे लडकों की नक़ल करना है। अगर वो शराब पियेंगे तो हम क्यों नहीं। इस तरह की सोच समाज को कहाँ ले जाएगी![1]

कभी कभी सोचती हूँ कि आज की जो पीढ़ी है ये कैसे दादा-दादी बनेंगे, क्या सिखायेंगे ये अपने से छोटों को। क्या है सिखाने के लिए! बात-बात पे गालियां, रिश्तों को तार-तार करने वाले क्या दे पाएंगे ये किसी को! एक समय था कि कम उमर में शादी कर दी जाती थी, पर उसे हटाया गया, कानून बनाया गया और बल विवाह को रोका गया। आज बाल विवाह नही होते, पर क्या सच में सभी माँ बाप अपने बच्चो को रोक पाते हैं, सातवीं-आठवीं क्लास में पढने वाली लडकियां गर्भवती हो जाती है, स्कूल जाने

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408015 |

वाले बच्चे अपनी सहपाठी का विडियो बना के सबको दिखाते हैं, क्या फर्क पड़ा कानून बनाने से, सिर्फ शादी ही तो नहीं करते ना। बाकि तो सब कर डालते हैं! क्यों नही रोक पाते माँ बाप। जब आजकल के माँ बाप नही रोक पते तो आने वाले समय में तो जरूर रोक पाएंगे..आने वाले समय में तो यही लोग बनेगे माँ-बाप..दादा, दादी। अपने इन्ही संस्कारों के साथ। हाथ में बड़ी बड़ी डिग्रियां, बड़ी बड़ी नौकरियां, पर मनुष्यता जैसी कोई बात नहीं! पर बुराई सब करते है कि जमाना बहुत बुरा हैं, पर खुद को सुधारना कोई नहीं चाहता..कोई नहीं सोचना चाहता कि क्या करते हैं उनके बच्चे, हम उनकी निजी जिन्दगी में दखल नहीं दे सकते। ऐसा कहकर पल्ला झड़ने वाले माँ -बाप को सचना चाहिए कि जब उनका एक बच्च पैदा होता है, तो वो उनका ही वंश नही बढाता, समाज का भी हिस्सा होता हैं वो। समाज के लिए भी जिम्मेवार होना चाहिए। और जो माँ बाप ये संस्कार नहीं दे पाते एक दिन उनका बच्चा खुद उनके साथ भी दुर्व्यवहार करता हैं। और क्यों ना करे। आपने सिखाया ही कहाँ उन्हें सही बर्ताव करना।[2]

अवलोकन

समय है कि अब लडकों के आचार व्यवहार पर विचार किया जाये, ताकि उनमें पनपने वाली अपराधी प्रवृत्ति कम हो सके! माँ बाप जैसे लड़की को पढाई के साथ घर का काम सिखाते हैं वैसे ही लडको को संस्कार भी दे, ताकि वो लड़कियों के प्रति, अपने से बड़ों के प्रति सम्मान का भाव रखना सीखे! परिवार के प्रति, समाज के प्रति अपनी जिम्मेवारी समझे! और ये समाज सच में सबके लिए रहने लायक बना रहे! लड़कियों को ये डर ना रहे कि रात हो गयी है, अकेले नहीं जाना चहिये, या सामने से आते हुए लडकों के समूह को देखकर सड़क पर अकेली जाती लड़की ना डरे! ऐसा नहीं है कि हर लड़का ऐसा होता है, पर ये सच है कि एक बड़ी संख्या में लड़के या पुरुष ऐसे होते हैं..जिस कारण आज भी लड़कियां घर से निकलते समय या घर में अकेले रहने पर भी डरती हैं! अतः जरूरी है कि लडकों में नैतिक जिम्मेवारी जगाई जाये! वरना कोई कानून कुछ नहीं कर सकता।आज सत्ता को अपने हाथ में रखने की जद्दो-जेहद परिवारों में नजर आ रही है। मेरे पिता की पीढ़ी में, पिता के हाथ में सत्ता थी और माँ के पास समर्पण भाव। लेकिन तब की ओर गहराई से देखे और सोचे कि क्या यह सहज प्रक्रिया थी? मेरी माँ की पीढ़ी चंद जमात पढ़ी हुई, पति को ही सर्वस्व मानने वाले सदियों के संस्कार, एक जन्म नहीं सात जन्मों का बंधन मानने वाली अर्थात पत्नी का सहज समर्पण। फिर भी चंद रूपए भी उसके हाथ में नहीं रह सकते, यह पिता की पीढ़ी का भाव क्या संकेत देता है? यदि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो यह मानसिक कमजोरी की निशानी है। वह इस डर से डरा हुआ है कि जो कुछ भी मेरे पास है,[3] वह कहीं खिसक नहीं जाए। यही डर उसे हिंसक बनाता है। आज तक यही डर, पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में सभी को मिलता रहा है। एक तरह नारी का सहज समर्पण फिर भी पुरुष के मन में बसा डर! हमें सोचने पर मजबूर करता है कि यह डर क्यों है? आज के परिपेक्ष्य में नारी के हाथ में पैसा और सत्ता दोनों ही हैं तो समर्पण का भाव तिरोहित होता जा रहा है। पुरुष को अपनी सत्ता खिसकती दिखाई दे रही है। ऐसे में हिंसा की अभिवृद्धि भी लाजमी है। जब पूर्ण समर्पण था, पति परमेश्वर था तब भी पुरुष अनजाने भय के कारण हिंसक हो उठता था तो आज साक्षात परिवर्तन को देखते हुए वह कैसे हिंसक नहीं बने? आज स्त्री और पुरुष के अधिकारों की बहस में परिवार कहीं छूट गया है। जब सम्पूर्ण सत्ता हाथ में थी तब भी डर था और आज सत्ता छिनती जा रही है तो यह डर कम होगा या बढ़ेगा? आज का प्रश्न यह है। [4]समाज को देखें तो महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव कम हुआ है, प्रतिद्वंद्विता बढ़ी है, हिंसा बढ़ी है अर्थात पुरुष का डर बढ़ा है। इस बढ़ते डर के साथ क्या हम स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की कल्पना कर सकते है? तो क्या हो? क्या महिला पूर्व की भांति समर्पण कर दे? क्या तब यह डर कम हो जाएगा? नहीं! इसका उत्तर सम्पूर्ण समाज को खोजना होगा। पुरुष के इस डर को निकालना होगा। जब तक यह डर उसके मन में घर कर के बैठा रहेगा समाज से हिंसा नहीं थमेंगी। नारी यदि पहले से भी अधिक समर्पण कर दे तो भी पुरुष की हिंसा नहीं थमेगी। हिंसा थमेगी केवल डर के भाव के मन से निकलने पर।[5]

विचार – विमर्श

किसी विद्वान ने कहा था कि व्यक्ति मृत्यु से नहीं जीवन के समाप्त होने से डरता है। अर्थात हमारा सुख छूट जाएगा यह डर व्यक्ति को मृत्यु से डराता है। इसी प्रकार पुरुष अपना आनन्द महिला के साहचर्य में ढूंढता है, बस यही डर का कारण है। मेरा आनन्द समाप्त ना हो जाए उसकी सोच का प्रमुख विषय यही है। इसलिए ही विवाह पद्धति में पत्नी छोटी हो, कम आयु वाली हो तथा कम पढ़ी-लिखी हो आदि बातें प्रमुख रहती हैं। येन-केन-प्रकारेण अपनी मुट्ठी में अपने आनन्द को रखने का जतन। अब प्रश्न है डर कैसे छूटे? क्या पुरुष के चाहने मात्र से उसका डर कम होगा? क्या महिला के अधिकार सम्पन्न होने से पुरुष का डर कम होगा? क्या महिला के समर्पण से डर कम होगा? ये सारे ही समाधान समाज खोज चुका है। लेकिन पुरुष का डर समाप्त नहीं हुआ। तो फिर

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408015 |

कैसे दूर होगा डर? शायद इस डर को एक माँ निकाल सकती है। क्योंकि माँ ने ही बच्चे का सृजन किया है उसका संवर्द्धन किया है। पिता की भूमिका भी शिक्षक की रह सकती है। अतः आज अधिकारों की बात ना करते हुए इस डर को निकालने में सहयोग करना चाहिए। विवाह पद्धति इस डर को बहुत कम करती थी लेकिन आज टूटती विवाह पद्धति इस डर को फिर बढ़ा रही है और हिंसा को जन्म दे रही है। इसलिए मेरी माँ की पीढ़ी को देखें तो उस पीढ़ी में कितना डर था या हिंसा थी और आज की पीढ़ी को देखे तो कितना डर है या हिंसा है?[6] निःसंदेह पहले की पीढ़ी में कम हिंसा थी तथा कम डर था। आज यह डर पुरुष से निकलकर महिला तक में समा गया है। पहले कोई तलाक का डर नहीं था आज तो सम्बंध विच्छेद आम बात है। इसलिए विवाह पद्धति के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है। आप कह सकते है कि पहले महिलाओं पर अत्याचार अधिक थे लेकिन केवल कह देने से मान्यता नहीं मिलती। साक्षात अपने परिवारों में झांकना होगा कि सच क्या था? जहाँ डर अधिक हावी था वहीं अत्याचार था। जहाँ आनन्द के अतिरेक की चाहत थी वहीं अत्याचार था, जहाँ आनन्द को घर के बाहर भी खोजा जा रहा था वहीं अत्याचार था। सात्विक पुरुष ने कभी अत्याचार नहीं किया। अतः सभी को एक तराजू में तौल देने से समाज सुदृढ़ नहीं होता। अतः विवाह पद्धति को सुदृढ़ करना पहली और व्यभिचार को कम करना दूसरी आवश्यकता है।[7]

परिणाम

व्यभिचार का भाव जन्मजात ही होता है अतः संस्कार ही इस अवगुण को कम कर सकते हैं। ऐसी पीढ़ी को मानसिक रोगी की तरह देखना चाहिए और सम्पूर्ण परिवार व समाज को उत्तरदायित्व लेना चाहिए कि वे ऐसे नवयुवकों को संस्कारित करे। उनका उपाय खोजें। दूरदर्शन पर घर बैठे ही सुलभ हो रहे नारी देह प्रदर्शन, व्यभिचारी पुरुष का व्यभिचार बढ़ाने में योगदान कर रहे हैं। परिणाम बलात्कार के रूप में सामने हैं। अतः संयमित आनन्द की ओर पुरुष को ले जाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। आज आनन्द को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकता बनती जा रही है। सिनेमा, दूरदर्शन, फैशन शो आदि अनेक उपक्रम केवल आनन्द के लिए ही हैं। अतः आनन्द की खोज की जगह कार्य की खोज होनी चाहिए। व्यक्ति श्रम में आनन्द ढूंढे, पठन-पाठन में आनन्द ढूंढे, खेल में आनन्द ढूंढे, अपने परिवार में आनन्द ढूंढे। अतः अकेले होते जा रहे व्यक्ति को परिवार की आवश्यकता है। जब वह विभिन्न रिश्तों की महक जानेगा तभी दैहिक आनन्द को प्राप्त करने की भूख कम होगी। अतः तीसरी आवयकता है परिवार। यदि परिवार और विवाह पद्धति को हमने सुदृढ़ कर लिया तो पुरुष का डर निकलेगा उसका व्यभिचारी मन संस्कारित होगा और वह निर्माण की और प्रवृत्त होगा।

दरअसल जब भी पुरुष की बात की जाती है तो एक छवि ऐसी बनती है जो किसी भी दर्द से पीड़ित नहीं है, जिसके पास अमोध शक्तियाँ हैं, वो जो चाहे कर सकता है, समाज में वह सदा शोषक की स्थिति में रहता है, कोई पुरुष का शोषण नहीं कर सकता वगैरह-वगैरह किन्तु यही सर्वथा सत्य नहीं है।[8]

जब भी पुरुष की बात होती है तो क्यों किसी विराट व्यक्तित्व का चित्र दिमाग में बनता है? अपने आसपास दृष्टि डालिए, क्या आपको कोई ऐसा पुरुष नहीं दिखता जो पीड़ित हो? क्या कोई ऐसा पुरुष नही समझ आता जिसका शोषण न हो रहा हो? क्या कोई ऐसा पुरुष आपकी निगाह में नहीं आता जो आपको पराधीन दिखाई देता हो? अवश्य ही दिखता होगा। मजदूर, घरों, कार्यालयों में काम करते नौकर, सड़क के किनारे छोटे-छोटे काम करते व्यक्ति, समाज के अन्य दूसरे छोटे-मोटे काम करते पुरुष भी तो शोषण का शिकार हैं।आखिर क्यों इस तरह की छावि बनी है कि यदि पुरुष विमर्श की चर्चा होगी तो वह स्त्री-विमर्श के प्रत्युत्तर में ही होगी? यह क्यों सोचा जाता है कि यदि पुरुष-विमर्श की बात की जायेगी तो उसके पीछे पति-पत्नी वाला स्वरूप ही सामने आयेगा? पुरुष भी शोषित है, घर में भी है, बाहर भी है। उसके शोषण की स्थितियाँ अलग हैं। उन पर विचार करने की स्थिति भी अलग रही है।[9]

वर्तमान में समाज के स्वरूप पर दृष्टि डालें तो भली-भांति ज्ञात होगा कि शोषक और शोषित के बीच अब लिंगभेद का जितना प्रभावी है, उसी तरह से प्रस्थिति भी प्रभावी है। आम आदमी आज हाशिए पर खड़ा दिखाई देता है। दलित वर्ग हाशिए पर ही दिखता है। मजदूर, आदिवासी, गरीब, लाचार पुरुष भी इस बात के अधिकारी हैं कि उनके साथ भी मनुष्य की तरह व्यवहार किया जाये। क्या इन लोगों के लिए पुरुष-विमर्श की आवश्यकता नहीं है?एक बात और है कि समाज के आधुनिक संस्करण में परिवार में पति-पत्नी के मध्य भी विवाद की स्थिति रहती है।[10] इस स्थिति के चलते परिवारों में स्त्री और पुरुष दोनों ही तनाव की स्थिति में रहते हैं। पत्नी भी प्रताड़ित है तो पति भी प्रताड़ित है। स्त्री भी परेशान है तो पुरुष भी परेशान है। समस्या दोनों ओर है। इस विमर्श को पुरुष-विमर्श के नाम से जानने में कौन सी बुराई है?चलिए, आज से ही सही किन्तु ब्लाग पर पुरुष-विमर्श की शुरुआत की जा रही है। समाज के शोषित, दमित, प्रताड़ित पुरुषों के बारे में, उनकी प्रस्थिति के बारे में जानने-समझने का तथा

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408015 |

उनमें चेतना का संचार करने, उनके व्यक्तित्व विकास के लिए भी प्रयास किया जायेगा (इनमें पत्नी पीड़ित पति भी शामिल हैं, परिवारीजनों से पीड़ित पुरुष भी शामिल हैं)[11]

निष्कर्ष

भारतीय समाज मे आज केवल स्त्री ही नही बल्कि पुरुष भी प्रताड़ित है, इसका दायरा हो सकता है स्त्री से कम हो लेकिन पुरुष का भी मानसिक रूप से जमकर शोषण हो रहा है ।[12]

आज लिव रिलेशन शिप में युवा-युवतियाँ खूब रहते है जब कभी भी आपसी संबंधों में दरार आती है तो पुरुष के ऊपर बलात्कार जैसे जघन्य आरोप मढ़ दिए जाते हैं । सहमतियों के साथ सेक्स करने वाली कई स्त्रियाँ वीडियो क्लिप इत्यादि के माध्यम से पुरुषों से मनचाहा धन की मांग करती है और जब कभी पुरुष इसमे असमर्थता दर्शाता है तो उसे सम्मान और स्वाभिमान पर ठेस पहुंचाने की धमकी दी जाने लगती है ।

सेक्स नेचुरल है, जिसे प्रत्येक स्त्री पुरुष मर्जी से सम्भोग व इंजॉय करता है । कई बार देखा गया है कि कई लड़कियाँ पुरुषों के जबरन पीछे पड़ जाती है और उसके मना करने ब्लॉक करने के पश्चात उससे जोड़े रखने का निवेदन करती है तथा काम क्रीड़ा करने के लिए उकसाती है और जब पुरुष सेक्स करने से पूर्व शादी वगैरह के लिए इनकार करता है तो स्त्री भलीभांति उससे इनकार करते हुए केवल सेक्स पूर्ति की इच्छा जाहिर करती है । इसी समझौते के साथ स्त्री पुरुष में सेक्स प्रक्रिया शुरू होती है एक दो वर्षों तक बिना रोकटोक के सेक्स का इंजॉय करते है और जब पुरुष अन्यत्र अपनी शादी की इच्छा जाहिर करता है तो स्त्रियाँ चिढ़ जाती है और ऊल जलूल आरोप लगाते हुए समाज मे बदनाम करने की धमकी दे डालती है और यहां से पुरुष का मानसिक शोषण शुरू होता है जबरन गले पड़ी लड़की को छुड़ाना पुरुषों के लिए दिक्कत पैदा कर देता है । अनेक पुरुष ऐसे फंसकर अपनी आत्महत्या कर लेते है ऐसा नही है कि स्त्रियों के शरीर का दोहन नही किया जाता है भारतीय समाज मे स्त्रियों को निरंतर प्रताड़ित किया जाता है लेकिन आज केवल स्त्री की पीड़ा की बात करके पुरुषों को अनदेखा करके विमर्श की बात नही की जा सकती है ।

सम्भोग मनुष्य की स्वायत्त प्रक्रिया है जिसकी पूर्ति वह विविध माध्यमो से करता है मनुष्य की श्रेणी से न स्त्री बाहर है न ही पुरुष । सहमति के साथ संभोग करने पर यदि घर लोग देख लेते है तो स्त्रियाँ पुरुष के ऊपर दोषारोपण कर देती है और अभिभावकों के द्वारा FIR करने पर स्त्री परिवार के साथ रहती है और पुरुष के खिलाफ गवाही देती है और सहमति के सम्भोग में भी पुरुष सलाखों के पीछे पहुंच जाता है ।[13]

दो-तीन वर्षों से शादी का झांसा देकर बलात्कार के आरोप कई स्त्रियों द्वारा पुरुषों के ऊपर लगाए गए हैं यहाँ एक चीज यह समझने की जरूरत है कि यदि कोई पुरुष बिना रिश्ता किए सम्बन्ध बनाने की बात करता है तब क्या सेक्स का आनन्द केवल पुरुष ही उठाता है मुझे लगता है ऐसा बिल्कुल नही है दो तीन वर्ष तक सेक्स करने का सीधा मतलब यह है कि स्त्री ने भी पुरुष के साथ सेक्स का आनन्द उठाया है तब पुरुष के ऊपर ही FIR क्यों ? [14]

ये ऐसे प्रश्न है जिनके बल पर पुरुष विमर्श की चर्चा शुरू की जा सकती है क्योंकि आज केवल स्त्री के पक्ष को देखकर पुरुषों को होने वाली पीड़ाओं को नकारना पूरी तरह से गलत है ।[15]

संदर्भ

1. ए बी सी चांडलर, डैनियल; मुंडे, रॉड (2016)। "मर्दानगीवाद (पुरुषवाद)" । मीडिया और संचार का एक शब्दकोश (दूसरा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। डोई : 10.1093/एकड़/9780191800986.001.0001 । आईएसबीएन 978-0-1918-0098-6.
2. ए बी सी कैथी यंग (जुलाई 1994)। "मैन ट्रबल्स: मेकिंग सेंस ऑफ द मेन्स मूवमेंट" । कारण । मर्दानगी (mas'kye liz*'em), n. 1. यह विश्वास कि लिंगों के बीच समानता के लिए पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह और भेदभाव की पहचान और निवारण की आवश्यकता है। 2. इसी विश्वास के इर्द-गिर्द संगठित आंदोलन।
3. बुनिन, निकोलस; यू, जियुआन (२००४)। पश्चिमी दर्शनशास्त्र का ब्लैकवेल डिक्शनरी । माल्डेन, मास: ब्लैकवेल पब्लिशिंग। पी 411. आईएसबीएन 1-40-510679-4.
4. ए बी सी क्रिस्टेंसेन, फेरेल (2005) [1995]। "मर्दानगी" । में Honderich, टेड (सं।)। द ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू फिलॉसफी (दूसरा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पीपी. 562-563. आईएसबीएन 0-19-926479-1. एलसीसीएन 94-36914 ।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408015 |

5. ब्लैस, मेलिसा; डुपुइस-डेरी, फ्रांसिस (2012)। "मस्कुलिनिज़्म एंड द एंटीफेमिनिस्ट काउंटरमूवमेंट"। सामाजिक आंदोलन अध्ययन । ११ (१): (२१-३९), २२-२३। डोई : 10.1080/14742837.2012.640532 । S2CID 144983000 ।
6. मैकलेरॉय, वेंडी (3 जून 2003)। "पुरुषों द्वारा प्रभावित लैंगिक मुद्दे" । फॉक्स न्यूज । मूल से 13 मई 2019 को संग्रहीत किया गया।
7. एलन, जूडिथ ए। (2009)। शार्लोट पर्किन्स गिलमैन की नारीवाद: लैंगिकता, इतिहास, प्रगतिवाद । शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस। पी ३५३ .
8. एलन २००९ , पृ. १५२ .
9. एलन २००९ , पृ. ३५३ .
10. एलन 2009 , पीपी 136-137 ।
11. एलन २००९ , पृ. १२७ .
12. सैम्पसन, डब्ल्यूएच (3 अप्रैल 1914)। "सभी आदमी की गलती नहीं"। द न्यूयॉर्क टाइम्स । पी 10.
13. लेरी, एंड्रिया एम। (2005)। "शार्लोट पर्किन्स गिलमैन एक मास्टर ऑफ ऑडियंस के रूप में: समाचार पत्र समीक्षक एक कट्टरपंथी व्याख्याता का पर्दाफाश करते हैं"। अमेरिकी साहित्यिक अध्ययन के लिए संसाधन । 30 : (216-235), 224. जेएसटीओआर 26366994 ।
14. पुरुषवाद, एन । ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी (तीसरा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। 2000.
15. पुरुषवाद, एन । ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ऑनलाइन (तीसरा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। 2000.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com